ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 11

* ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख की अगली कड़ी में आगे बढ़ते हुए आदर्श व्यवस्था स्थापन करने के एक और गुण के बारे में विचार करते हैं। भौतिक दुनिया के कारोबार के संबंध में जिन्होंने किताबें लिखी हैं, उन्होंने एक और गुण के बारे में लिखा है कि कारोबार करने वाले desirable होने चाहिएँ जिसका dictionary अर्थ है वांछनीय, ऐसे इष्ट व्यक्ति जो कारोबार के योग्य हों।

मैनेजमेन्ट के बारे में लिखने वाले को मैनेजमेन्ट गुरु तथा राजनीति के बारे में लिखने वाले को राजनीतिक गुरु मानते हैं। भारत में चाणक्य को राजनीति का गुरु माना गया है। चाणक्य ने सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य को स्थापन करने में मुख्य भूमिका अदा की थी। ऐसे ही इंग्लैण्ड में राज्यव्यवस्था और लोकतंत्र व्यवस्था के बारे में लिखने वाले Professor A.V. Dicey एक बहुत प्रसिद्ध मार्गदर्शक गुरु हुए हैं। उन्होंने लिखा है - Democracy rarely permits a country to be governed by its desirable and able persons. अर्थात् लोकतंत्र के कारोबार में अच्छे और योग्य व्यक्तियों के द्वारा कार्य होने की संभावना बहुत कम है। इसलिए राज्यव्यवस्था को मानने वाले राजकीय समालोचक (Political critics) कहते हैं कि भारत की संसद में अच्छे लोग कम चुनाव जीतकर आते हैं। जो लोग चुनकर आते हैं उनमें से ज्यादातर अपनी जाति, बल, पैसे तथा गुण्डा तत्व के आधार पर चुने जाते हैं और इस समय अंदाज है कि 1/3 सांसद एवं विधायक दागी हैं अर्थात् जिनके ऊपर कोर्ट केसेज़ चल रहे हैं। मेरे एक परिचित पुलिस ऑफिसर ने मुझे कहा कि ऐसे गुण्डा तत्व वाला एक व्यक्ति जब चुनाव जीतकर एम.एल.ए. बनकर आया तब हमारे लिए विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई क्योंकि कल तक जिसे हमने जेल की सलाखों के पीछे कैदी के रूप में रखा था उसे आज हमें सलाम करना पड़ रहा था।

विश्व के इतिहास में भी देखने में आता है कि कई ऐसे राजायें हुए हैं जिनका राज्यकारोबार इतना भ्रष्ट था कि प्रजा उनसे सदा असन्तुष्ट रहती थी इसलिए प्रजा ने उनके विरुद्ध क्रांति की। जैसे रशिया में ज़ार तथा उनके प्रमुख सलाहकार रासपुतिन अत्याधिक भ्रष्ट एवं दुराचारी होने के कारण प्रजा ने उनके विरुद्ध क्रांति की जिसमें प्रजा ने ज़ार व उसके परिवार वालों को मार डाला तथा रासपुतिन की भी हत्या की। ऐसे ही द्वितीय विश्व महायुद्ध में एडॉल्फ हिटलर को भ्रांति थी कि केवल जर्मन लोग ही आर्यन हैं इसलिए सारे विश्व पर उन्हें ही राज्य करने का हक है इसलिए उसने द्वितीय विश्व महायुद्ध कराया जिसमें करोड़ों लोगों की हत्या हुई एवं अरबों रुपयों का नुकसान हुआ। अमेरिका में भी प्रेसीडेन्ट निक्सन को भ्रष्टाचार के कारण राष्ट्राध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा और अन्य एक वाइस प्रेसीडेन्ट जो पहले एक राज्य के गवर्नर थे, उन्होंने भ्रष्टाचार किया एवं वाइस प्रेजिडेन्ट बनने के बाद भी भ्रष्टाचार करते रहे और भ्रष्टाचार के पैसे चैक से लेकर अपने बैंक में जमा करते रहे। जब अखबार वालों को उनके भ्रष्टाचार के बारे में मालूम पड़ा तो उनके ऊपर कानूनी कार्यवाही शुरू की परंतु उन्होंने खुद अपने पद से इस्तीफा दे दिया और समझौता हो गया।

इस प्रकार आज की दुनिया में योग्य व्यक्ति राज्यकारोबार करने वाले बहुत कम मिलते हैं। भारत में भी ऐसे प्रधानमंत्री हुए हैं जो योग्य नहीं थे एवं उनके समय में देश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया था। विदेश में तो क्रांति होती है लेकिन भारत में तो चुनाव होता है जिससे लोग देश में परिवर्तन लाते हैं और योग्य व्यक्ति को चुनकर लाते है।

शिवबाबा ने भी योग्य व्यक्ति चुनने के लिए तीन मापदंड रखे हैं - स्वपसंद, लोकपसंद और प्रभुपसंद।

स्वपसंद में तो आप जानते हैं कि हरेक को निजी जीवन में सत्यता, पवित्रता आदि दैवी गुणों की धारणा करनी है और इन गुणों के आधार पर ही वे शिवबाबा के द्वारा स्थापित राज्य में राज्य कर सकते हैं। इस पर एक कहानी है कि एक राजा था, उसने अपने जीवन में ऐसे भ्रष्टाचारी कार्य किये कि प्रजा उसे पसंद नहीं करती थी। जब वह मृत्युशैय्या पर था तब उसने अपने राजकुमारों को बुलाया और कहा कि आप ऐसे कार्य करो जो लोग कहें कि इनसे तो इनका बाप योग्य था, अच्छा था। बाद में उनके बड़े बेटे ने ऐसे-ऐसे कानून बनाये कि लोग परेशान हो गये और कहने लगे कि इनसे तो इनका बाप अच्छा था। अमेरिका में भी जब व्यक्ति चुनाव में खड़े होते हैं तो वे लोगों को बहुत अच्छा खाना खिलाते हैं और अपने परिवार से मिलाते हैं इससे लोग समझते हैं, अगर इनका परिवार सुखी है तो ज़रूर यह चुनाव के बाद हमें भी सुख देंगे।

लोकपसंद : - शिवबाबा ने कहा है कि हरेक को लोकपसंद बनना ज़रूरी है क्योंकि जो लोकपसंद होगा वही भविष्य में राजा बनेगा। जो व्यक्ति जितना मन-वचन-कर्म द्वारा सबको सुख, शांति की अनुभूति करायेगा उतना ही वह लोकपसंद होगा। अभी बाबा लोकपसंद के आधार पर लोगों का चुनाव कर रहे हैं। सबको आगे बढ़ने का और श्रेष्ठ पद पाने का समान अधिकार एवं मौका देते हैं। ज्ञान भी सबको समान देते हैं परंतु फिर भी बच्चे नम्बरवार बनते हैं। नम्बर हरेक अपने पुरुषार्थ अनुसार अपने आप ही लेते हैं, बाबा नहीं देते हैं। दुनिया में तो चुनाव के परिणाम के बाद ईर्ष्या-द्वेष आदि आ जाते हैं परंतु बाबा जो राजाई स्थापन कर रहे हैं, उसमें सभी बच्चे अपने वर्तमान तथा भविष्य के पुरुषार्थ के अनुसार ऊँच पद की प्राप्ति करते हैं इसलिए सतयुगी राज्य में कभी भी किसी में भी आपस में मतभेद नहीं होते हैं।

मैं जब ऑस्ट्रेलिया में था तब मुझे एक बहन ने पूछा था कि सतयुग में लक्ष्मी-नारायण व अन्य देवी-देवतायें इतने गहने आदि क्यों पहनते हैं, ऐसे लक्ष्मी-नारायण को हम कैसे रिगार्ड दें? मैंने उस बहन को कहा कि ये मुकुट, जेवर आदि तो वहाँ के ऐश्वर्य के प्रतीक हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वे सारा समय इन ज़ेवरों को पहनकर घूमते रहते हैं। जैसे इंग्लैण्ड की महारानी के पास करोड़ों पाउण्ड के ज़ेवर हैं। उनका जब फोटो छपता है या पोस्टल स्टैम्प पर उनका जो फोटो होता है उसमें वह राजमुकुट पहने होती हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वे सारा समय सभी कीमती गहनें एवं राजमुकुट पहनकर ही रहती हैं। फिर मैंने उस बहन को दूसरी बात बताई कि वर्तमान में हमारी जो दादियाँ हैं उन्होंने वर्तमान में श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर सभी का विश्वास अर्जित किया है और वही फिर भविष्य में राज्य अधिकारी बनेंगी। तब मैंने बहन से पूछा कि क्या आपको उनके राज्य में आना पसंद है? उस बहन ने कहा, जरूर आना पसंद करूंगी। इस प्रकार वर्तमान समय के पुरुषार्थ एवं लोकपसंद व्यवहार के आधार पर ही हम भविष्य में विश्वराज्य अधिकारी बन सकते हैं इससे हमारा आपस में मतभेद भी नहीं होगा। कई बार अनेक आत्मायें लोकपसंद बनने की बजाय लोगों पर अपनी विचारधारा लादते हैं परिणामस्वरूप वहाँ तानाशाही हो जाती है और ऐसे समय पर जब क्रांति होती है तब तानाशाह के पुतलों को

गिराकर फाँसी देते हैं। जैसे रशिया में लेनिनग्राद में वहाँ के तानाशाह लेनिन के पुतले को गिराया और फाँसी पर चढ़ाया और उस शहर का नाम लेनिनग्राद से बदलकर फिर से सेन्ट पीटर्सबर्ग कर दिया। इस प्रकार तानाशाह कभी लोकपसंद नहीं बन सकते।

प्रभुपसंद: – प्रभु पसंद बनना बहुत मुश्किल है। हम आत्मायें त्रिकालदर्शी नहीं हैं परंतु शिवबाबा तो त्रिकालदर्शी हैं। इस कारण वे हमारा भूत-वर्तमान-भविष्य सब जानते हैं। मैं अपना अनुभव बता रहा हूँ। यह मेरा अनुभव मैं अपने अहंकार के कारण नहीं बता रहा हूँ परंतु परमात्मा के कार्य के बारे में बता रहा हूँ। नवम्बर 1968 में वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिचुअल ट्रस्ट की स्थापना हुई और उसमें सभी बातों का तथा ट्रस्टीज़ के नाम का निर्णय हो चुका था, सिर्फ मैनेजिंग ट्रस्टी कौन बनेगा यह फाइनल होना बाकी था। दादी प्रकाशमणि, दीदी मनमोहिनी तथा दादा आनंदकिशोर की राय थी कि मैं (रमेश भाई) इस ट्रस्ट का मैनेजिंग ट्रस्टी बनूँ और इस पर हमारी आपस में बहुत चर्चा हुई तथा अंत में यह निर्णय हमने ब्रह्मा बाबा पर छोड़ दिया।

जब बाबा के पास आये तो रात्रि क्लास में भी बहुत चर्चा हुई तथा मैं भी 1/2 घंटा इसी बात को लेकर बोलता रहा कि मैं मैनेजिंग ट्रस्टी नहीं बनूँगा। ब्रह्मा बाबा ने मेरी सभी बातों का खण्डन किया और त्रिकालदर्शी शिवबाबा ने ब्रह्मा मुख से महावाक्य उच्चारे कि बच्चे, आप नहीं जानते कि आप भूतकाल में अर्थात् 5000 वर्ष पहले भी इस ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी थे, वर्तमान में भी रहोगे और भविष्य में भी आप ही बनेंगे और यही ड्रामा की भावी है। फिर मैंने बाबा को कहा कि यह तो आपका ब्रह्मास्त्र है अर्थात् आपका ब्रह्मवाक्य है। शास्त्रों में कहा गया है कि महाभारत के युद्ध के समय जब अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा था तब श्रीकृष्ण ने सभी पाण्डवों को कहा कि आप इस ब्रह्मास्त्र के सामने नतमस्तक हो जाओ तो यह आपका कुछ अहित नहीं करेगा। अगर आप इसके विरुद्ध युद्ध करेंगे तो नष्ट हो जायेंगे। इसलिए बाबा, आपके ब्रह्मास्त्र के सामने मैं कुछ नहीं कह सकता हूँ और नतमस्तक होता हूँ।

जब मातेश्वरी जी अव्यक्त हुए तब यज्ञ की मुख्य संचालिका तथा मुख्य सह-संचालिका किसे बनाया जाये, यह ब्रह्मा बाबा के सामने बड़ी समस्या थी क्योंकि उस समय उनकी बेटी दादी निर्मलशांता जी, पुत्रवधू दादी बृजेन्द्रा जी तथा भतीजे की पत्नी दादी संतरी जी भी थी। साथ-साथ दादी जानकी जी, दादी चन्द्रमणि जी एवं दादी मनोहर इन्द्रा जी आदि सब थे, उन सभी में से ऐसे सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को चुनना बहुत बड़ा काम था। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने इन सबमें से दादी प्रकाशमणि जी तथा दीदी मनमोहिनी जी को यज्ञ की मुख्य संचालिका तथा मुख्य सह-संचालिका नियुक्त किया। ब्रह्मा बाबा ने वंश परंपरा की बात को स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार बाबा ने योग्य व्यक्ति को इष्ट व्यक्ति बनाया। अव्यक्त बापदादा ने एक स्लोगन दिया है, इष्ट से अष्ट बनो अर्थात् जो वर्तमान में इष्ट बनते वह भविष्य में इष्ट देवता बनते और वही अष्ट रत्न में आते हैं। इष्ट बनना अर्थात् Desirable बनना बहुत ज़रूरी है तभी हम अष्ट रत्न में आ सकते हैं।

इसी संदर्भ में हम सब जानते हैं कि मातेश्वरी जी के ज्ञान में आने से पूर्व कई आत्मायें ज्ञान में आईं और समर्पित भी हुईं। मातेश्वरी जी को ज्ञान देने वाली किकनी बहन थी परंतु ब्रह्मा बाबा ने 18-19 वर्ष की कन्या को ही मातेश्वरी के पद पर नियुक्त किया और उनके हाथ में इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का सम्पूर्ण कारोबार सौंप दिया। वह प्रभुपसंद बनने की परीक्षा में पहले नम्बर में पास हुई इसलिए सर्वयोग्य और हम सबकी इष्ट बनीं। ❖

चुनौतियों को अवसरों में बदलो